International Journal of Multidisciplinary Research and Development 2014; 1(5): 148-150

International Journal of Multidisciplinary Research and Development

IJMRD 2014; 1(5): 148-150
www.allsubjectjournal.com
Received: 30-09-2014
Accepted: 10-10-2014
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979
(ISRA) Impact Factor 1.762

Devesh Kumar Mishra
Assistant Professor, Sanskrit, Uttarakhand Open University, Teen pani bypass road, Haldwani, Nainital, India

Correspondence:
Devesh Kumar Mishra
Assistant Professor, Sanskrit, Uttarakhand Open University, Teen pani bypass road, Haldwani, Nainital, India

बीसवीं शताब्दी में उत्तराखण्ड की विद्वत् परम्परा

Devesh Kumar Mishra

शोध सारांश
बीसवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध भारत की पराधीनता, भारत के स्वतंत्रता संग्राम का समय था तो बाद का आधा भाग भारत की स्वतंत्रता के अभ्युदय एवं भारत के विकास का समय था। इस शताब्दी में भी उत्तराखण्ड में संस्कृत–साहित्य–सृजन की गति विद्यमान थी । इस काल में उत्तराखण्ड के कुमाँऊ क्षेत्र में ख्याति प्राप्त काव्यकार हुए जैसे , केदारदत्त जोशी, विद्याभूषण श्रीकृष्ण जोशी,श्रीकृष्ण पन्त, जनार्दन शास्त्री, तारादत्त जोशी, प्रेमबल्लभ शर्मा, भोलादत्त पाण्डे, तारादत्त पन्त, महामहोपाध्याय पण्डित नित्यानन्द पंत पर्वतीय, डॉ जयदत्त उप्रेती आदि। बीसवीं शताब्दी में गढवाल में भी संस्कृत काव्यकारों की सुदीर्घ परम्परा दिखाई देती है। इस समय में यहाँ बालकृष्ण भट्ट, हरिकृष्ण, श्रीधर प्रसाद बलूनी, जितेन्द्र चन्द्र भारतीय, शशिधर शर्मा, श्रीकान्त आचार्य, रामप्रसाद हटवाल और अशोक डबराल जैसे संस्कृत काव्यकारों का परिचय प्राप्त होता है।

प्रस्तावना
बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में यद्यपि भारत पराधीन था, तथापि देश के अनेक स्थलों में विद्वत परम्परा उसी प्रकार जीवित रही । यदि यह कहें की संस्कृत साहित्य में मौलिक कार्यों का सम्पादन पराधीन भारत में ही भली – भॉति हुआ तो कोई अत्युक्ति न होगी । प्रस्तुत शोध पत्र में विशेषतः उत्तराखण्ड के निवासी व अन्यत्र शिक्षा प्राप्त विद्वानों के साहित्यिक योगदान का मूल्यांकन करना ही विशेष अभीष्ट है । वस्तुतः उत्तराखण्ड के निवासी वे विद्वान जन्म के कारण उत्तराखण्डी कहलाते है, किन्तु कतिपय ऐसे है जिनकी शिक्षा काशी में सम्पन्न हुई और वे साहित्य की परम्परा को अग्रसर करने में सहायक बने । उनमें उत्तराखण्ड के कुमाउँ और गढवाल दोनों मण्डलों के निवासी विद्वान पाये जाते है । इनकी कृतियों का संक्षेपतः परिचय यहॉ प्रस्तुत है

केदारदत्त जोशी
केदारदत्त का जन्म अल्मोड़ा जनपद के जुनायल गाँव में सन् 1909 ईसवी में हुआ था। इनकी शिक्षा बाबा विश्वनाथ की नगरी काशी में हुई थी, तथा इन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में ज्योतिष का अध्यापन भी किया था। जोशी जी द्वारा मूल ग्रन्थ की टीका किये गये ग्रन्थों के नाम इस प्रकार हैं –
1. उपपत्ति (सिद्धान्तशिरोमणि मध्यमाधिकारान्त)
2. सूर्यग्रहण विमर्श
3. स्वरशास्त्र विमर्श
4. दैवज्ञभरण
5. गणित प्रवेशिका
6. बृहदवकहड़ाचकम्
7. ग्रहगणिताध्याय
8. मूहूर्तचिन्तामणि– (पीयूषधाराव्या टीका)

वद्याभूषण' श्रीकृष्ण जोशी
श्रीकृष्ण जोशी बीसवीं शताब्दी के हैं। इनका जन्म सन् 1883 ईसवीं में अल्मोड़ा नगर के चीनाखान मुहल्ले में हआ था। इनके पिता का नाम बद्रीदत्त जोशी था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा अल्मोड़ा तथा नैनीताल में सम्पन्न हुई। इसके बाद इन्होंने म्योर सेन्ट्रल कॉलेज इलाहाबाद से बी.ए. तथा एल.बी. की उपाधियॉ प्राप्त की। यद्यपि इनकी जीविका का साधन वकालत रहा किन्तु स्वाध्याय द्वारा इन्होंने संस्कृत में विद्वता प्राप्त कर ली थी। सन् 1912 से 1926 तक वकालत ही इनका पेशा था। बाद में इन्होंने गॉधी जी के कहने पर वकालत त्याग दी और मदन मोहन मालवीय जी के प्रभाव एवं प्रेरणा से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में लगभग 20 वर्षों तक संस्कृत अध्यापन का कार्य किया। श्रीकृष्ण की विद्वता से प्रभावित होकर काशी के विद्वत समाज ने उन्हें 'विद्याभूषण' की उपाधि प्रदान की थी। श्रीकृष्ण जोशी का रचना संसार वृहत् है। जिसका विवरण इस प्रकार है–
1. अन्तरंगमीमांसा (मनोविज्ञान विषयक ग्रन्थ)
2. श्रीकृतार्थकौशिकम् (पौराणिक नाटक)
3. परमतत्त्वमीमांसा (दर्शन विषयक ग्रन्थ)
4. श्रीकृष्णमहिम्न स्तोत्र
5. श्रीराममहिम्न स्तोत्र
6. श्री गंगामहिम्नस्तोत्र

श्रीकृष्ण जोशी के ये छः काव्य प्रकाशित हैं। इसके अलावा इनके अप्रकाशित ग्रन्थों की सूची बहुत बड़ी हैं जिनकी हस्तलिखित प्रतियॉ अखिल भारतीय संस्कृत संस्थान,लखनऊ तथा कवि के नैनीताल स्थित आवास (कृष्णापुर,नैनीताल) मे प्राप्य हैं। उनके अप्रकाशित ग्रन्थ इस प्रकार हैं

1. रामरसायन महाकाव्य	2. स्यमन्तकनाम महाकाव्य	3.अखण्डभारतम्
4. परशुरामचरितम् नाटक	5. यमराजपराज नाटक	6. पृथुचरितम्
7. वीरभारत काव्यम्	8. हिमालयमहिमा	9.संगीतराधवीयम्
10 श्रीमद्भगवद्गीताभाष्य	11. धातुपाठ (पॉच भागों में)	12.क्रियाकलाप

श्रीकृष्ण पन्त

श्रीकृष्ण पन्त का जन्म सन् 1904 ईसवी में अल्मोड़ा के निकट स्थित 'मलेरा' गाँव में हुआ था। इनकी माता का नाम तुलसी तथा पिता का नाम भवदेव था। इनके गुरू का नाम श्रीमद् चन्द्रधर था। श्रीकृष्ण की शिक्षा–दीक्षा काशी में सम्पन्न हुई। ये संस्कृत के अलावा हिन्दी एवं बंगाली भाषा के भी अच्छे ज्ञाता थे। इन्होंने मुख्य रूप से सम्पादन, भाषानुवाद तथा टीका आदि कार्य ही सम्पन्न किए है। इन्होंने जिन अनेक ग्रन्थों का सम्पादन किया वे इस प्रकार है –

1. मधुसूदन शास्त्री विरचित 'सिद्धान्तबिन्दु' का सानुवाद सम्पादन।
2. शंकराचार्य विरचित 'प्रकरण पंचक' के पाँचों प्रकरणों का सानुवाद सम्पादन
3. ब्रहमसूत्रशांकरभाष्य का 'रत्नप्रभा' टीका' सहित सम्पादन
4. योगवशिष्ठ के पाँचों भागों का सम्पादन
5. ' वृहदारण्यक' 'वार्तिकसार', 'वेदान्तमत संग्रह' तथा 'शिवस्तुति' का सम्पादन
6. ' ब्रहमवैवर्तपुराणान्तर्गत काशी–केदार माहात्म्य' का सानुवाद सम्पादन
7. निरूक्त की टीका एवं विस्तृत भूमिका
8. 'वाड्.मयार्णव' का सम्पादन

श्रीकृष्ण पन्त द्वारा सम्पादित उपर्युक्त ग्रन्थ संस्कृत साहित्य के महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं।

जनार्दन शास्त्री

जर्नादन शास्त्री सन् 1920 मे अल्मोड़ा के 'सालम' गाँव में पैदा हुए थे। इनके पिता का नाम गोपालदत्त पाण्डे था। इनकी शिक्षा–दीक्षा काशी में सम्पन्न हुई। इनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं।

1. गोरक्षा संहिता (दो भाग)
2. गोरक्षसिद्धान्तसंग्रह
3. भक्ति विवेक
4. सिद्धसिद्धान्त पद्धति
5. तर्ककुतूहलम्
6. सांख्यदर्शन
7. भुशुण्डि रामायण
8. कर्मकाण्डप्रदीप
9. भगवद्भक्तिरसायन
10. अन्योक्तिविलास
11. सारव्यकारिका (गौड़पाद)
12. अलंकारप्रभा

तारादत्त जोशी

ये अल्मोड़ा के समीपस्थ सोमेश्वर के 'सर्प' गाँव के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम नीलाम्बर जोशी था। इनके पितामह आदि हिमाचल प्रदेश के राजगुरू एवं राजज्योतिषी पद पर आसीन थे। इन्होंने भी अपनी पारिवारिक परम्परा का निर्वाह किया। तारादत्त जोशी द्वारा रचित **नवग्रहों में प्रसिद्ध शनि, बुध तथा राहु आदि मन्त्रों पर विस्तृत भाष्य भाषा–टीका** सहित उपलब्ध है, जो वेंकटेश्वर प्रेस मुंबई से मुद्रित है।

प्रेमबल्लभ शर्मा

बीसवीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध संस्कृत विद्वान प्रेमबल्लभ शर्मा अल्मोड़ा जनपद के द्वाराहाट के ग्राम कौला के मूल निवासी थे। इन्हें साहित्य, पुराण, मीमांसा तथा न्याय आदि विषयों का विशद् ज्ञान था। इनका अधिकांश जीवन काल द्वाराहाट इन्टर कॉलेज में अध्यापन कार्य करते हुए बीता इनकी रचनाएँ इस प्रकार है –

1. नागार्जुन माहात्म्य
2. नागार्जुनाष्टक
3. विभाण्डेश्वर माहात्म्य

भोलादत्त पाण्डे

आयुर्वेद के ज्ञाता तथा सुविख्यात स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी रहे भोलादत्त पाण्डे रानीखेत के समीप स्थित 'पुथुली' गाँव में सन् 1908 में जन्में थे। इनके पिता का नाम तारादत्त पाण्डे था, जो स्वंय आयुर्वेद के प्रकाण्ड विद्वान थे। भोलादत्त ने अपने पिता से ही चरक, सुश्रुत, माधवनिदान, अष्टांग आयुर्वेद तथा योग आदि की शिक्षा प्राप्त की थी। भोलादत्त ने **'पार्वत्यऔषधीतन्त्र'** नाम से लगभग 2000 श्लोंको में एक विशाल चिकित्सा विषयक ग्रन्थ की रचना की थी। इस ग्रन्थ की रचना हेतु इन्होंने 1944–46 तक हिमालय के दुर्गम क्षेत्रों का भ्रमण करके हिमालय के औषधीय पादपों के चिकित्सकीय गुणों का ज्ञान प्राप्त किया था। इनके आयुर्वेद विषयक ज्ञान की विलक्षणता के कारण विद्वत समाज ने इन्हें **'आयुर्वेदिक वृहस्पति'** की उपाधि से अलंकृत किया था।

तारादत्त पन्त

बीसवी शती के तारादत्त का जन्म पिथौरागढ़ जनपद के 'बरसायत' ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम दुर्गादत्त तथा माता का नाम भागीरथी था। इन्होंने अपनी माता के नाम से ही प्रायः सभी टीकाएँ लिखी हैं। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। आगे की शिक्षा हेतु ये काशी चले गए। यही इन्होने संस्कृत साहित्य, व्याकरण, दर्शन, मीमांसा आदि विविध शास्त्रों का अध्ययन किया। इन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से साहित्याचार्य एवं व्याकरणाचार्य की उपाधियाँ प्राप्त की। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से संबद्ध रणवीर संस्कृत विद्यालय में दीर्घकाल तक इन्होंने अध्यापन कार्य किया। काशी में बहुत समय तक निवास करने के बाद ये ऋषिकुल हरिद्वार तथा ऋषिकेश में भी विद्याभ्यास तथा विद्याध्ययन करते रहे। इनकी विविध रचनाओं को देखकर इनकी विद्वता का सहज अनुमान हो जाता है। इनकी कृतियाँ इस प्रकार हैं –

1. सूर्यचरित या ऋतुचरित महाकाव्य
2. गोलविद्या
3. गोलसूत्र
4. भारतवर्ष भूगोल (श्लोकबद्ध)
5. आर्याप्रवाह (पण्डित गुरू परम्परा वर्णन)
6. दाशरथिभरतचरितनाटक
7. भारतोद्वार
8. इन्द्रियार्थमीमांसा (गद्यरचना)
9. सौवर (स्वरमीमांसा गद्यमय)
10. वर्णमालासूत्र (भाषा टीका सहित)
11. पांचभौतिक (दर्शन ग्रन्थ)
12. संस्कृत भाषा में कूर्मांचल का इतिहास (गोरखा शासन तक)

इन मौलिक रचनाओं के अलावा तारादत्त पन्त ने विश्वेश्वर की मन्दारमञ्जरी पर 'कुसुमाख्या टीका', चरक संहिता, रसार्णवसंहिता, अष्टागहृदय, सारड्.गधर संहिता, भावप्रकाश, रसेन्द्रसारसंग्रह आदि ग्रन्थों पर 'भागीरथी' टिप्पणी (भाष्य) लिखी। इन्होंने स्कन्दपुराण के मानसखंण्ड का प्रतिसंस्कार एवं हिन्दी अनुवाद भी किया था।इसके अलावा 'गुमानी' कवि के 'ज्ञानभैषज्यमंजरी' तथा 'वल्लरी' एवं 'सुप्रभातम्' संस्कृत पत्रिकाओं का सम्पादन भी इन्होंने किया।

पण्डित नित्यानन्द पन्त 'पर्वतीय'

नित्यानन्द पन्त के पूर्वज अल्मोड़ा जनपद के 'तिलाड़ी' गाँव के रहने वाले थे। बाद में इनके परदादा काशी में ही बस गए थे। नित्यानन्द के पिता का नाम नामदेव था। बीसवीं शती के साहित्यकार नित्यानन्द पन्त ने संस्कृत वाड्.मय की श्रीवृद्धि में अपना अपूर्व योगदान दिया। मात्र 19 वर्ष की अवस्था में इन्होंने व्याकरणाचार्य की पदवी प्राप्त कर ली थी। इनके पाण्डित्य के कारण इन्हें

महामहोपाध्याय की उपाधि से समंलकृत किया गया था। ये व्याकरण,मीमांसा,कर्मकाण्ड तथा वेदान्त के अद्भुत विद्वान थे। इन्होंने निम्न ग्रन्थों की रचना की थी–

1. लघुशब्देन्दुशेखर की 'दीपक' टीका
2. संस्कार दीपक
3. अन्व्यकर्मदीपक
4. वर्षकृव्यदीपक
5. कातीयेष्टिदीपक
6. सापिण्ड्यदीपक
7. परिशिष्ट दीपक

डॉ जयदत्त उप्रेती

जयदत्त उप्रेती मूलतः अल्मोड़ा के समीप स्थित पंतौली ग्राम के निवासी हैं। इनका जन्म सन् 1933 ईसवी में हुआ था। बचपन से ही संस्कृत के प्रति इनका विशेष लगाव था। उत्तर प्रदेश सचिवालय में लिपिक पद पर कार्य करते हुए इन्होंने संस्कृत में बी0ए0 तथा एम0ए0 किया। कालान्तर में ये संस्कृत के अध्यापन कार्य से जुड़ गए। अनेक संस्कृत विद्यालयों में कार्य करते हुए इन्होंने सन् 1980 से 1995 तक संस्कृत विभाग कुमाऊँ विश्वविद्यालय के अल्मोड़ा परिसर में अपनी सेवाएं दी। इन्होंने दर्शन विषय पर 'सिद्धान्तशतकम्' नामक मौलिक ग्रन्थ की रचना की जो विद्वज्जनों के मध्य विशेष आदर को प्राप्त है। इन्होंने पाँच व्याकरण ग्रन्थ भी लिखें। वेदों में इन्द्र इनका पी–एच0डी0 उपाधि हेतु लिखा गया शोध ग्रन्थ है। आर्य समाज से गहराई से जुड़े श्री जयदत्त उप्रेती ने कुमाऊँ विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त होने के बाद अल्मोड़ा के निकट ज्योली गाँव में आवासीय संस्कृत विद्यालय भी खोला था, किन्तु धनाभाव तथा संस्कृत के प्रति लोगों की कम होती रूचि के कारण वह अधिक समय तक नहीं चल सका। आज भी ये निरन्तर सुभारती की सेवा में संलग्न हैं।

बालकृष्ण भट्ट

बालकृष्ण का जन्म टिहरी जिले के ग्राम जखौली में सन् 1901 में हुआ था। इनके पिता का नाम तारादत्त तथा माता का नाम मूंगा देवी था। अपने परिवार की परम्पर के अनुरूप बालकृष्ण ने आरम्भ में ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड का अध्ययन किया। इसके बाद विधिवत् संस्कृत का अध्ययन आरंभ करके लाहौर के सनातन धर्म कॉलेज से विशारद की उपाधि प्राप्त की। सन् 1925 में ओरियन्टल कॉलेज लाहौर के शास्त्री परीक्षा तथा बनारस में सर्वदर्शन शास्त्री के प्रथम दो खण्ड उत्तीर्ण किए। लाहौर से अपने ग्राम वापस आकर ये अध्ययन कार्य करने लगे। ये महान ज्योतिषी एवं कर्मकाण्डी ब्राह्माण थे। उनकी उपलब्ध रचनाएँ इस प्रकार है।

1. कनवंश महाकाव्य (4 भाग)
2. स्वतन्त्राभारतम्
3. जगदम्बाशतकम्
4. शिवशतकम्
5. जगदम्बाशतकम्
6. तपोवन शतकम्
7. कालिदास जन्म भूविलासः,
8. काव्य प्रबन्ध
9. जातक दीपिका
10. ताजिक चन्द्रिका
11. संस्कार पद्धति
12. पितृकर्मपद्धति
13. दुर्गापूजापद्धति
14. पूजापद्धति
15. शान्तिपद्धति (दानचन्द्रिका)
16. तार्चनकथविधि
17. साहित्यकल्पलतिका
18. अनुवाद दीपिका
19. बालप्रस्ताव
20. बालशिक्षा
21. आत्मदर्शन काव्य
22. नव्य भारतनाटकम् (अप्रकाशित)
23. सूर्य प्रयागतार्थ महात्म्यम् (हिन्दी अर्थ सहित)

हरिकृष्ण

टिहरी जिले में स्थित ग्राम रानीहाट में हरिकृष्ण का जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम दुर्गादत्त था इसी लिए हरिकृष्ण साहित्यजगत में हरिकृष्ण दौर्गादत्ति के नाम से विख्यात हुए। ये 20 वीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध कवि हुए। महाराजा कीर्तिशाह के राज्यकाल में उन्हीं के सान्निध्य में इन्होंने अपनी रचनाओं का निर्माण किया। इनकी निम्नलिखित तीन रचनाएं प्राप्त होती हैं –

1. शतश्लोकीरघुवंशम्
2. प्रस्तावपुष्पाजंलिः
3. स्तवनस्तवकावलिः

हरिकृष्ण दौर्गादत्ति ने देहरादून ट्रेनिंग कॉलेज में अध्यापन कार्य किया। टिहरी के हाईस्कूल में भी इन्होंने अध्यापन कार्य किया। उपर्युक्त तीन ग्रन्थों के अलावा तीन

अन्य ग्रन्थ भी लिखे थे, जिनका नाम **'अप्रतिमप्रतिमा', 'द्वैतध्वान्तनिवारणम्'** तथा **'अप्रतिमनिरूपणखण्डम्'** हैं। इनका उल्लेख कवि ने स्वयं अपनी प्रस्तावपुष्पांजलि के अन्त में किया है। प्रस्तावपुष्पांजलि में विविध छन्दों में नीतिवर्णन, चन्द्रवर्णन षट् ऋतु वर्णन, श्रृंगार तथा भक्ति विषयक कविताओं का छः स्तवकों में विभाजन किया गया है।

शतश्लोकी रघुवंश में हरिकृष्ण दौर्गादत्ति द्वारा 'रघुवंश महाकाव्य' को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस काव्य में राजा दिलीप से लेकर अग्निवर्ण तक के रघुवंशी राजाओं का वर्णन किया गया है। इनके स्तवनस्तवक काव्य का विस्तृत उल्लेख प्राप्त नहीं होता है।

शिवप्रसाद भारद्वाज

शिवप्रसाद भारद्वाज का जन्म सन् 1922 ईसवी को लगभग गढ़वाल क्षेत्र के पौड़ी जनपद के निकट स्थित गाँव डांग में हुआ था। इनकेपिता का नाम हीरामणि तथा माता का नाम उत्तरादेवी था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा–दीक्षा हरिद्वार से तथा आगे की शिक्षा संस्कृत महाविद्यालय गढ़मुक्तेश्वर से हुई सन् 1942 से 1959 तक इन्होंने दिल्ली में अध्यापन कार्य किया। इन्होंने वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय से शास्त्री तथा आचार्य की उपाधियॉ प्राप्त की थी। सन् 1959 में शिवप्रसाद विश्वबन्धु वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर में प्राध्यापक के पद पर नियुक्त हुए। बाद में पंजाब विश्वविद्यालय में भी आपको व्याख्याता बने।बींसवी शती के महान संस्कृत साहित्यकार शिवप्रसद की लगभग तैतसी (33) प्रकाशित रचना है, जो इस प्रकार है

1. लौहपुरूषवदानम् (महाकाव्य)
2. इन्दिराविलास 3. वारूणीमहिमा तथा 4. कामकौतुकम् ये तीनों मुक्तक काव्य है।

5. गुरूरविदासशतकम् (शतक काव्य) तथा 6. इन्दिागौरवम् (द्विशतककाव्य है।) 7. न्यायः, 8. पुत्रैषणा, 9. इयं सुमंगलीवधू, 10. कुमाता न भवति 11. पुरूषद्वेषिणी तथा 12. स्नेहहप्रतिफलम् ये छः सामाजिककथाएँ हैं। 13. पुरोघसः स्वप्नः सामाजिक प्रहसन तथा 14. नारदस्य दिल्लीयात्रा रूपक का भाण नामक भेद है। 15. मेघदूतम् घ्वनिरूपक तथा 16. स्वातंत्र्यसुखम् प्रेक्षणक हैं। 17. बालस्पशः तथा 18. गुरूदक्षिणा बालकथाएँ हैं। 19. बन्धुजीवः (उपन्यास) 20. तंरगलेखा प्रकीर्णकाव्य संग्रह तथा 21. अभिनवरागमोदितम् मौलिक गीत संग्रह है।

श्रीधर प्रसाद बलूनी

बलूनी जी का जन्म पौड़ी गढ़वाल के ग्राम बागी में सन् 1941 में हुआ था। इनके पिता श्रीकृष्ण तथा माता श्रीमती धन्वन्ती देवी थी। इनके दादा ज्योतिष के विद्वान थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा अपने गाँव में ही हुई। आदर्श संस्कृत पाठशाला, तिमली, पौड़ी गढ़वाल से इन्होंने उत्तरमध्यमा तक की शिक्षा प्राप्त की। तत्पश्चात् सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय बनारस से इन्होंने शास्त्री तथा साहित्याचार्य की उपाधि प्राप्त की। इनकी निमनलिखित संस्कृत रचनाएँ प्राप्त होती हैं–

1. दशमेशचरितम् (सिक्खगौरवम्) 2. श्रीबदरीशस्तोत्रम्
3. श्रीकेदारनाथस्तोत्रम् 4. श्रीगुरूरामरायचरितामृतम्

3.3.2.5. श्रीकृष्ण सेमवाल

श्रीकृष्ण सेमवाल का जन्म केदार घाटी के यमुनापार (ह्यूण) गाँव में सन् 1949 को हुआ था। इनके पिता का नाम नाथोराम था जो ज्योतिष तथा तन्त्रशास्त्र के ज्ञाता थे। प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद श्रीकृष्ण ने उत्तराखण्ड संस्कृत विद्यापीठ, गुप्तकाशी से संस्कृत का अध्ययन किया। इनके आराध्य गुरू व्याकरणाचार्य भास्करानन्द मैठाणी थे। विद्यापीठ से आकर इन्होंने गुरूकुल आदि संस्कृत महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य किया साथ ही वाराणसेय संस्कृत विश्व विद्यालय से व्याकरणाचार्य की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। बाद में इन्होंने बी0ए0 तथा एम0ए0 की उपाधियाँ भी प्राप्त की श्रीकृष्ण सेमवाल की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं –

1. इन्दिराकीर्तिशतकम् 2. अन्योक्तिपंचाशिका
3. दयानन्दशतकम् 4. युद्धशतकम्
5. मुक्तककाव्यम् 6. क्रान्तिवीर–विरुदावलिः

इन्दिराकीर्तिशतकम् में इन्दिरा गाँधी के जीवन चरित की प्रमुख घटनाओं को सौ शलोकों में प्रस्तुत किया गया है। काव्य की भाषा सरल तथा प्रवाहपूर्ण है। अन्योक्तिपंचाशिका उपदेशात्मक ग्रन्थ है। इस काव्य में प्रत्येक पद्य स्वतंत्र है। हंस, कोयल, बन्दर समुद्र, सूर्य, चन्द्रमा, वायु, कमल आदि प्रकृति के विभिन्न अंगों को सम्बोधित कर कवि ने सामान्य जन के लिए विविध उपदेश दिए हैं। दयानन्दशतकम् में दयानन्द सरस्वती का वर्णन है।

श्रीकृष्ण सेमवाल की कुछ अन्य प्रकाशित संस्कृत रचनाएँ भी है यथा–

1. पीयूषम् 2. भक्तिरसामृतम् 3. वाग्मैभवम्
4. संघे शक्ति कलौ युगे 5. प्रियदर्शनीयम् 6. भीमशतकम्
7. व्यावहारिक संस्कृतम् 8. सर्वमङ्गलाशतकम् 9. हिमाद्रिपुत्राभिनन्दनम्
10. विन्सरस्तोत्ररत्नावलिः 11. शक्तिसौरभम् 12. शनिसमाराधना
13. संस्कृत भाषा में 20 गीत एवं अन्य लेख

शशिधर शर्मा, श्रीकान्त आचार्य, रामप्रसाद हटवाल, जितेन्द्र चन्द्र भारतीय, अशोक डबराल आदि प्रमुख है ।

निष्कर्ष –

बीसवीं शताब्दी में भी उत्तराखण्ड में संस्कृत साहित्य की समृद्ध परम्परा सतत् गतिमान रही इस कालखण्ड में उत्तराखण्ड के कुमाँऊ क्षेत्र में अनेकानेक स्वनामधन्य कवि हुए इनके अलावा इस शताब्दी में कुमाँऊ में अन्य भी साहित्यकार हुए जिनका विषय विस्तार भय से हम यहाँ पर उल्लेख नहीं कर सके। गढ़वाल में भी अनेक साहित्यकार हुए जिन्होंने संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं में ग्रन्थ रचना करके संस्कृत साहित्य भण्डार की अभिवृद्धि में अपना अतुलनीय योगदान दिया। इन सभी कवियों द्वारा विरचित ग्रन्थ संस्कृत प्रेमी जनों के प्रेरणा स्रोत हैं। कुमाँऊ तथा गढ़वाल में उल्लिखित संस्कृत कवियों के अलावा भी उत्तराखण्ड में ज्योतिषादि ग्रन्थों की रचना करने वाले विद्वानों की भी एक लम्बी परम्परा रही है जिसका उल्लेख स्थान संकोच के कारण यहाँ नही किया जा सका ।

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1. कुमाँऊ का इतिहास – बद्रीदत्त पाण्डे
2. कूर्मांचल में संस्कृत वाड्.मय का विकास – डॉ बसन्त बल्लभ भट्ट
3. गढ़वाल की संस्कृत साहित्य को देन – डॉ प्रेमदत्त चमोली
4. आधुनिक संस्कृत काव्य परम्परा : – हेडगेवार